एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 04 (अप्रैल, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

बीज उपचार: फसलो का रोगों से छुटकारा

*मेघराज मीणा[1], धर्मेंद्र मीना[2], सत्यनारायण रेगर[3], राधिका मीणा[1] एवं राम नारायण कुम्हार[1]
[1]महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत
[2]कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान, भारत
[3]कृषि विश्वविद्यालय, कोटा, राजस्थान, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: meghrajsknau@gmail.com

फसल उत्पादन में जलवायु, मिट्टी व बीज की अहम भूमिका रहती है इनमें से जलवायु पर किसी का नियंत्रण नही है ओर भूमि को भी नही बदला जा सकता है, लेकिन बीज एक ऐसा माध्यम है जिसका सही चयन कर उत्पादन बढाया जा सकता है तथा फसलों में 10–15 प्रतिशत होने हानि वाली को कम किया जा सकता है।

बीजोपचार की आवश्यकता

जिस प्रकार बालक के प्रारम्भिक स्वास्थ्य के टिकाकरण की आवश्यकता होती है ठीक उसी प्रकार फसलो मे बीजोपचार आवश्यक है।

1. बीजो से उत्पन्न होने वाली कीटो व बीजजनित बीमारियों को बीजोपचार के द्वारा नियंत्रण किया जा सकता है।
2. बीजों के अच्छे अंकुरण व अंकुरण प्रतिशतता को बढाने के लिए।
3. पोषक तत्वो का प्रभावी ढंग से उपयोग हो सकें।

बीजोपचार कैसे करे

1. सूखी विधि–इस विधि में बीजों को उपचारित करने के लिये बीज व दवा की उपयुक्त मात्रा मिलाकर बीजो को ड्रम / मटकी में डालकर 10–12 मिनट के लिए घुमाते है जिससे दवा की हल्की परत समान रूप से बीज के ऊपर चढ जाती है।
2. गीली विधि–इस विधि में बीजों को उपचारित करने सर्वप्रथम आवश्यकतानुसार गुड़ की मात्रा (पानी का 1/4 भाग) लेते है। गुड़ को पानी के साथ गर्म करके गाढा घोल तैयार करते है। उसके बाद घोल को 10 .15 मिनट तक ठण्डा करते है। बीज को उपचारित के लिए मिट्टी /प्लास्टिक के बर्तन में आवश्यकतानुसार मिश्रण (दवा व गुड़ घोल) बना कर बीजों पर डालकर अच्छी प्रकार मिलाये । उपचारित बीज को छाया 3.4 घंटे तक सुखाकर बुवाई करे। जिससे बीज जनित बीमारिया समाप्त हो जाये।

बीजोपचार का सही क्रम :- (F-I-R)

सबसे पहले कवकनाशी, कीटनाशी व अन्त में जीवाणु कल्चर से उपचारित करे।

बीजोपचार रसायन की मात्रा

1.	किटनाशी	इमिडाक्लोफिड 17.8 SL	1 मि.ली./किलो
2.	फफुदनाशी	मैंकोजेन 75 प्रतिशत WP थाईरम 85 प्रतिशत WP केप्टाज 75 प्रतिशत WP	3 ग्राम/किलो
3.	जीवाणु	कार्बोक्सिन 75 प्रतिशत WP कार्बोण्डाजिम 50 प्रतिषत WP	1.5–2 ग्राम/किलों
	जीवाणु	राइजोबीयम - दलहनो एजोस्परिलम - अनाज वाली फसलो के लिए एजोटोबेक्टर	600 ग्राम/हेक्टेयर

उपचार के समय क्या रखे सावधानिया

1. सूखी विधि से उपचारित बीज को गीली जगह पर न रखे।
2. उपचारित के समय बीज व रसायन की सही मात्रा काम में लेवे।
3. जितना आवश्यक हो उतना ही बीज उपचारित करे व बचे हुए बीज को खाने में काम न लावे और न ही जानवरों को खिलावे।
4. उपचारित बीज को छाया में सुखाकर बुवाई करे।
5. जिस व्यक्ति के हाथो में घाव या खरोच हो वह उपचारित न करे तथा उपचार के समय हाथो मे दस्ताने पहने।
6. जीवाणु खाद से बीजोपचारित करने के बाद गर्म जगह न रखे एंव 12 धंटे के भीतर बुवाई करे ।